आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 8 • अंक-2237 • उदयपुर, रविवार 07 फरवरी, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

सावधान ! कोरोना वैक्सीन के नाम पर कहीं आप न हो जाएं ठगी का शिकार

देश में लोगों को अब कोरोना वैक्सीन लगवाने का इंतजार है। लोग जल्द से जल्द वैक्सीन लगवाना चाहते हैं। लेकिन उससे पहले ही जिंदगी देने वाली वैक्सीन के नाम पर लोगों को ठगने की शुरूआत हो चुकी है। दरअसल कोरोना वैक्सीन एप कोविन के नाम पर कई सारे फर्जी एप्स आ चुके हैं तो कई वेवसाइट के फर्जी लिंक के माध्यम से सबसे पहले वैक्सीन लगवाने की बात कही जा रही है। ऐसे में सावधानी जरूरी है। ये एप्स और लिंक्स फर्जी है और भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय ने इसे लेकर आम लोगों को सतर्क किया है।

किसी तरह के झांसे में मत आइए, अभी प्ले स्टोर पर नहीं आया है को–विन एप : शहर के साइबर एक्सपर्ट श्याम चंदेल के अनुसार सबसे बड़ी बात यह है कि सरकार ने तो अभी तक आधिकारिक तौर पर को–विन एप को लांच भी नहीं किया है। लेकिन हेकर्स लोगों की और से गुगल प्ले स्टोर पर बहुत सारे को–विन नाम के एप मिल जाएंगे। लेकिन, जानकारी के लिए बता दें कि गूगल प्ले–स्टोर पर मौजूद सभी एप फर्जी है। असली को–विन एप अभी प्ले–स्टोर पर उपलब्ध भी नहीं कराया गया है। इसलिए इन पर व्यक्तिगत जानकारी डाउनलोड या साझा न करें। यह एप आधार कार्ड से लिंक होगा और हेकर्स लोग आपके आधार कार्ड का ओटीपी लेकर बैंक अकाउन्ट खाली कर सकते हैं। वहीं यदि कोई कॉल कर के भी आपको एप डाउनलोड कर के पंजीकरण कराने की बात कहता है तो उसके झांसे में मत आइएगा।

ऐसे करें फर्जी और सही की जांच

एप डाउनलोड करने से पहले, डवलपर के विवरण की जांच करें क्योंकि सरकार ने को–विन एप को दो कंपनी को दिया है। इसमें एक को–विन इलेक्ट्रॉनिक्स के रूप में सूचीबद्ध किया गया है, जबकि दूसरे को डवलपर के रूप में सी–चिप दिया गया है। सरकार के एप में सरकार से संबंधित ईमेल आईडी ही होगी। उदाहरण के लिए जीओवीडॉटइन ईमेलआईडी होगी, जबकि हेकर्स की आईडी में जीमेल या कोई और दूसरी आईडी होगी।

फर्जी एप पर चेताया

केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने हाल ही लोगों को फर्जी एप्स को लेकर चेताया है। उन्होंने कहा कि को–विन के नाम से शरारती तत्वों ने कई एप्स बनाए हैं, ऐसे में इन पर अपनी निजी जानकारी साझा ना करें। सरकार से मंजूरी प्राप्त एप आने पर सभी को जानकारी दी जाएगी। स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से कहा गया है कि को–विन एक ऐसा मोबाइल एप है जो फ्री में डाउनलोडिंग के लिए सभी को उपलब्ध होगा। इस एप में टीकाकरण की प्रक्रिया से लेकर प्रशासनिक क्रियाकलापों और टीकाकरण कर्मियों और जिन्हें वैक्सीन दी जानी है, उनकी पूरी जानकारी रहेगी।

राशन पाकर हर्षाया बाबूराव

दिवाली के दो दिवस पूर्व नारायण सेवा संस्थान से राशन सामग्री सहायता पार बाबूराव और परिजन बहुत प्रसन्न हुए और हने लगे– संस्थान के द्वारा दिए गए दीये जलायेंगे और राशन से मीठा बनाकर दीपावली मनायेंगे। वडगांव– गंगाखेड़ (परभणी) निवासी 40 वर्षीय बाबूराव दोनों पांवों से दिव्यांग है।

पत्नी इंदुमती दोनों आंखों से रोशनीहीन है। इने 10 वर्ष की एक बेटी है। भीख मांगकर गुजारा करने वाले इस परिवार पर कोरोना का ऐसा संकट आया कि दैनिकचर्या के साथ दो जून रोटी खाना भी दुभर हो गया। पति–पत्नी और बेटी रोटी–रोटी की मोहताज हो गई। दिव्यांग दम्पती भूख से इतने सताये गए कि पल–पल उन्हें मृत्यु करीब नजर आने लगी।

ऐसे परिवार की जानकारी जैसे ही संस्थान की परभणी शाखा को मिली तो उसने मदद करनी शुरू की। दो माह से निरन्तर राशन पार परिवार बहुत प्रसन्न है। सहयोग करने वाले हाथों एवं दानवीरों का दिल से दुआ दे रहा है। दीपोत्सव के दिन शाखा संयोजिका मंजू जी दर्डा ने परिवार को मिठाई भेंटकर हर संभव मदद का भरोसा भी दिलाया। आपे प्रेषित भोजन सामग्री सहयोग ऐसे गरीब दिव्यांग और मजदूर परिवारों का निवाला बन रहा है जिनी आखिरी उम्मीद टूटने वाली थी आपका सहयोग हजारों गरीब परिवारों के लिए खुशियों की सौगात है।

दिव्यांग भी कर सकते हैं बड़ा काम

आंकड़ों के लिहाज से भारत में करीब दो करोड़ लोग शरीर के किसी विशेष अंग से दिव्यांगता के शिकार हैं। दिव्यांगजनों को मानसिक सहयोग की जरूरत है। यदि समाज में सहयोग का वातावरण बने, लोग किसी दूसरे की शारीरिक कमजोरी का मजान उड़ाएं, तो आगे आने वाले दिनों में हमें सारात्मक परिणाम देखने को मिल सकते हैं। समाज के इस वर्ग को आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराया जाये तो वे कोयला को हीरा भी बना सकते हैं। समाज में उन्हें अपनत्व–भरा वातावरण मिले तो वे इतिहास रच देंगे और रचते आएं हैं। एक दिव्यांग की जिंदगी काफी दुःखों भरी होती है। घर–परिवार वाले अगर मानसिक सहयोग न दें, तो व्यक्ति अंदर से टूट जाता है। वैसे तो दिव्यांगों के पक्ष में हमारे देश में दर्जन भर कानून बनाए गए हैं, यहां तक कि सरकारी नौकरियों में आरक्षण भी दिया गया है, परंतु ये सभी चीजें गौण हैं, जब तहम उनकी भावनाओं के साथ खिलवाड़ करना बंद ना करें। वे भी तो मनुष्य हैं, इ्श्वयार और सम्मान के भूखे हैं। उन्हें भी समाज में आम लोगों के साथ प्रतिस्पर्धा करनी है। उनके अंदर भी अपने माता–पिता, समाज व देश का नाम रोशन करने का सपना है। बस स्टॉप, सीढियों पर चढने–उतरने, पंक्तिबद्ध होते वक्त हमें यथासंभव उनकी सहायता करनी चाहिए।

आइए, एक ऐसा स्वच्छ माहौल तैयार करें, जहां उन्हें क्षणिक भी अनुभव ना हो कि उनके अंदर शारीरिक रूप से कुछ कमी भी है। नारायण सेवा संस्थान परिवार की अपील है कि दिव्यांगों का मजाक न उड़ाएं, उन्हें सहयोग दें। साथ ही उनका जीवन स्तर उपर उठाने में संस्थान के प्रकल्पों में मदद भेजकर स्वयं सहयोगी बनें... एक उदाहरण पेश करें अपने परिवार में... समाज में.... संस्कारों से...।

35वां दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह समारोह
कोरोना की गाइडलाइन में विवाह सम्पन्न

होढों पर मुस्कान, दिल में नवजीवन की उमंगें और जीवन साथी का साथ पाकर खिले हुए चेहरों ने मौसम के ठंडे मिजाज मे गर्मजोशी से बंधे नए रिश्तों की मिठास घोल दी। अपनों के बीच हर कोई अपना, मानो सच हुआ बरसों का सपना। यह समां था नारायण सेवा संस्थान के 35वें सामूहिक विवाह समारोह का। उदयपुर में लियों का गुड़ा स्थित नारायण सेवा संस्थान के मुख्यालय पर 27 दिसम्बर को कोविड–19 गाइडलाइंस की पालना करते हुए धूमधाम से हुए सामूहिक का विवाह समारोह में दिव्यांग ओर वंचित वर्ग के 11 जोड़े परिणय सूत्र में बंधे। इससे पूर्व विवाह की सभी रस्में परम्परा और ठाट–बाट के साथ सम्पन्न हुई। कोविड–19 से संबंधित प्रोटोकाल के कारण इस बार विवाह समारोह में केवल रिश्तेदारों और जोड़ो के शुभचिंतकों को ही आमंत्रित किया गया। संस्थान परिसर में सजे भव्य पांडाल में पंडितों के मंत्रोच्चार के बीच जोड़ों ने सात फेरे लिए। इसके बाद दानदाताओं ने सभी विवाहित जोड़ों के लिए कन्यादान के रूप में घरेलू उपकरणों और उपहार में अन्य वस्तुओं को भेंट किया। विदाई की वेला में सबकी आंखों नम हो आई। सबने वर–वधू को सुखी दाम्पत्य जीवन का शुभाशीष दिया। जोड़ों ने नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक चेयरमैन पूज्य कैलाश जी मानव व कमलादेवी जी से भी आशीर्वाद लिया।

7 वचन और 7 फेरे लेकर नव जीवन की डोर में बंधें 11 जोड़े

विवाह के पवित्र बंधन में बंधे सभी जोड़ों ने अग्नि के फेरे लेने के साथ ही नियमित तौर पर मास्क पहनने व कोरोना महामारी के प्रति जन जागरण का प्रण भी लिया। यह सामूहिक विवाह समारोह एक ऐसा आयोजन था जो उनके दिल के बेहद करीब था। संस्थान का विशेष अभियान 'दहेज को कहे ना!' भी इसी से जुड़ा है। संस्थान पिछले 18 वर्षो से इस अभियान को आगे बढ़ा रहा है। संस्थान के प्रयासों से अब तक 2109 जोड़े सुखी और संपन्न वैवाहिक जीवन बिता रहे हैं। सभी के लिए एक स्थायी आजीविका प्रदान करने के लिए निःशुल्क सुधारात्मक सर्जरी, कौशल विकास से संबंधित कक्षाएं और सामूहिक विवाह समारोह का आयोजन करने के साथ–साथ प्रतिभाओं को विकसित करने से संबंधित गतिविधियों से जुड़ी सेवाएं भी प्रदान की जा रही है। संस्थान ने दिव्यांग और वंचित लोगों की सेवा करके उन्हें सशक्त बनाया है और उन्हें स्थायी आजीविका प्रदान की है। राजस्थान, महाराष्ट्र, बिहार, गुजरात और कई राज्यों के निर्धन और दिव्यांगों ने नारायण सेवा से संपर्क किया था और अपने विवाह के लिए सहायता करने का आग्रह किया था। संस्थान न सिर्फ दिव्यांगों की भलाई के काम में जुटा है, बल्कि संस्थान का निरंतर यह भी प्रयास है कि दिव्यांग लोगों को समाज में सामान्य तौर पर स्वीकार किया जाए और उन्हें आगे बढ़ने के समान अवसर उपलब्ध कराए जाएं। कोविड–19 के कारण इस बार सामूहिक विवाह समारोह में सीमित संख्या में ही लोग शामिल हुए।

नींव का पत्थर

एक बार स्व॰ लालबहादुर शास्त्री से उनके एक मित्र ने पूछा, 'शास्त्री जी, आप हमेशा प्रशंसा से दूर रहा करते हैं और आदर–सत्कार के कार्यक्रमों को टाला करते हैं। ऐसा क्यों?' शास्त्री जी ने हँसकर जवाब दिया, 'मित्र! इसका यह कारण है कि एक बार लाल जी (लाला लाजपतराय) ने मुझ से कहा था, 'लालबहादुर! ताजमहल बनाने में दो प्रकार के पत्थरों का उपयोग हुआ है–एक बहुमूल्य संगमरमर पत्थर, जिसका उपयोग गुम्बज के लिये और यत्र–तत्र भी किया गया है तथा दूसरा एक साधारण पत्थर, जिसका ताजमहल की नींव में उपयोग किया गया है और जिसकी ओर किसी का ध्यान नहीं जाता। लालबहादुर! हमें अपने जीवन में इस दूसरे प्रकार के पत्थर का ही अनुकरण करना चाहिये। अपनी प्रसिद्धि, प्रशंसा और आदर– सत्कार से हमेशा दूर रहकर सत्कर्म करते रहना चाहिये।' बस, उनकी यह सीख मेरे मन में बैठ गयी और मैं उस नींव के पत्थर का अनुकरण करता रहता हूँ।

सम्पादकीय

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। ये परिवर्तन स्वतः होते हैं पर प्रकृति यह नहीं देखती कि वह किसके लिये उपयोगी होंगे और किसके लिए अनुपयोगी। प्रकृति का यह भी विभाजन नहीं होता कि कौनसा परिवर्तन किसके लिये सकारात्मक होगा और किसके लिये नकारात्मक। वहाँ तो निरंतर परिवर्तन का क्रम जारी है।

अब हमें यह देखना है कि हम अपने बुद्धिबल या कौशल से कैसे इन परिवर्तनों को अपने अनुकूल बना लेते हैं। अनुकूलता या प्रतिकूलता परिस्थितियों के बजाय भावों पर ज्यादा निर्भर होती हैं। हम जैसे भाव से परिवर्तन को ग्रहण करेंगे वही भाव हमें उसके सार्थकता या निरर्थकता को बतायेंगे। यह भी सत्य है कि प्रकृति प्रत्येक प्राणी के लिये अनुकूलन का प्रयास करती है, वह हरेक को अवसर देती है सफलता के लिये, किन्तु हम अपने भावों के आधार पर ही उन्हें समझ सकेंगे। प्रश्न यह नहीं है कि हम प्रकृति के प्रति अपनी समझ बढ़ायें, प्रश्न यह है कि हम अपने प्रति अपनी समझ बढ़ायें।

कुछ काव्यमय

परिवर्तन तो शाश्वत हैं
ये तो होते रहते हैं।
कोई अनुकूल होते हैं
तो कोई प्रतिकूल पर
हम उन्हें सहते हैं।
यह प्रकृति का उपहार है।
हमें हर हाल में स्वीकार है।

- वख्तीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

अपनों से अपनी बात

पुण्य की मुद्रा

एक धनाढ्य सेठ ने एक रात सपने में देखा कि यात्रा के दौरान उसकी कार के बेक अचानक फेल हो गए और कार सैकड़ों फिट गहरी खाई में गिर पड़ी। दुर्घनास्थल पर ही उसकी मृत्यु हो गई। यमदूत उसे उठा ले गए। स्वर्ग के द्वार पर देवराज इन्द्र ने सेठ का स्वागत किया। सेठ के हाथ में बड़ा –सा बैग देखकर उन्होंने ने सेठ से पूछा– इसमें क्या है? इस पर सेठ ने उत्तर दिया– इसमें मेरे जीवन भर की कमाई है।

देवराज ने एक तरफ इशारा करके सेठ से कहा– इसे वहां रख आराम कीजिए। तत्पश्चात् सेठ ने वहां आराम किया। थोड़ी देर बाद सेठ स्वर्ग के बाजार में निकला। एक दुकाने से बहुत सी वस्तुएं खरीदने के बाद उसने अपने बैग में से नोट निकाले तो दुकानदार ने कहा– कि

यह मुद्रा यहाँ नहीं चलती । वह दुकानदार की शिकायत लेकर देवराज के पास गया। देवराज ने उसे समझाया– एक व्यापारी होकर इतना भी नहीं जानते कि एक देश की मुद्रा दूसरे देश में नहीं चलती। आप मृत्युलोक की मुद्रा स्वर्गलोक में खपाना चाहते हो? सेठ रोने लगा। वह बोला कि उसने दिन–रात चैन नहीं लिया, माता, पिता, गरीब– असहायों की सेवा छोड़ दी, पत्नी– बच्चों की सेहत का ध्यान नहीं रखा, किसी की सहायता नहीं की सिर्फ पैसा ही कमाया, पर सब व्यर्थ हो गया।

देवराज ने कहा – धरती पर रहकर आपने जो अच्छे कर्म किये हो जैसे किसी भूखे को भोजन कराया हो, किसी अनाथाश्रम– वृद्धाश्रम में दान दिया हो, यदि आदि पुण्य ही यहाँ की मुद्रा है। उसी धन से आप स्वर्ग के सुखों का आनंद ले सकते हैं। अन्यथा आपको नर्कलोक जाना होगा। तभी सेठ की नींद खुल गई और उसने जीवन में सद्कर्म का का निर्णय लिया। मनुष्य को अपना जन्म सार्थक करने के लिए परोपकार के मार्ग पर चलना चाहिए। जो लोग जीवन में सिर्फ अपना ही हित सोचते है, उनका जीवन व्यर्थ है।

– कैलाश 'मानव'

तूफान का सामना

खरगोश के समान तेज भागकर विश्राम करने से लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती बल्कि कछुए के समान बिना रूके लगातार चलते रहने से ही लक्ष्य हासिल होगा।

लड़की कार चला रही थी। पास वाली सीट पर पिता बैठे थे। कुछ आगे तेज तूफान दिखाई देने लगा। लड़की पिता से बोली–कार रोक दूँ ?

पिता ने उत्तर दिया–नहीं, कार मत रोको। चलती चलो। कुछ आगे जाने पर तूफान का वेग और तेज हो गया। लड़की कार पर सही नियंत्रण नहीं रख पा रही थी। उसने पिता से पुनः पूछा– अब तो कार रोक दूँ ?

उसने देखा कुछ कारे वहीं सड़क के किनारे पर खड़ी थी और उनके चालक तूफान के गुजरने के इंतजार में थे। बहुत मुश्किल से वह स्टेयरिंग पर नियंत्रण रखती हुई, पिता की आज्ञानुसार लगातार कार चलाती रही और 2–3 किमी आगे जाने के बाद पिता से पूछ बैठी– आपने उस समय रूकने के लिए क्यों नहीं कहा जब मैं तूफान में बड़ी मुश्किल से कार चला पा रही थी और अब आप रूकने के लिए कह रहे हैं, जबकि तूफान गुजर चुका है।

इस पर पिता ने कहा–जरा पीछे मुड़कर देखो। लड़की ने देखा तो पाया कि पीछे तूफान का वेग बढ़ गया है जबकि वह तूफान को पार कर के आगे निकल चुके है। पिता ने बेटी को समझाया– परिस्थितियां बेहतर होने की प्रतीक्षा में लोग जीवनभर वहीं रह जाते हैं जब जो लोग तूफान के बीच में रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ते हैं, वे ही सफल होते हैं और अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं। मित्रो! सतत् रूप से किये गए छोटे –छोटे प्रयायो से बड़े से बड़ा लक्ष्य भी प्राप्त किया जा सकता है। खरगोश के समान तेज भागकर विश्राम करने से लक्ष्य की प्राति नहीं होती बल्कि कछुए के समान बिना रूके लगातार चलते रहने से ही लक्ष्य हासिल होगा। राह में बाधाएँ कितनी ही क्यों न आएं परंतु प्रयास सदैव अनवरत् होने चाहिए। चरेवैति। चरेवैति।

– सेवक प्रशान्त भैया

संस्थान से सीखा : जीवन को बदला

मेरा नाम वीणा कोदली है नाईन्थ क्लास तक पढ़ी हूँ। एक छोटी बहन है जो कैन्सर जैसी भयानक बीमारी का ग्रास बन चुकी है। दीदी की शादी के लिये बचा के रखे थे पैसे पर छोटी बहन के ईलाज में लग गये सारे पैसे तो बहुत परेशनी आ रही है। एक बड़ी बहन जिसकी शादी होनी बाकी है। और एक सबसे छोटी बहन जो कि अक्सर बीमार रहती है। लेकिन वीणा ने ईश्वर में आस्था रखते हुए नारायण सेवा संस्थान से 45 दिन का निःशुल्क सिलाई कोर्स किया।

वे बताती हैं– मैंने नारायण सेवा संस्थान से सिलाई सीखी है उसमें मैंने लेडिज के कपड़ों की सिलाई सिखी जिसमें ब्लाऊज, पैटीकोट और सलवार सूट बनाना सीखा है।

इससे मार्केट में मेरा काम सब पसन्द करते हैं। बहुत अच्छा सिखाया और मैंने भी मन और रूचि से सिखा। मैं सुबह 11 बजे जाती हूँ। प्रतिदिन 200– 300 रुपये कमा लेती हूँ। मैं आज जो भी कमा रही हूँ नारायण सेवा संस्थान की तरफ से बहुत बड़ा योगदान है। आज वीणा अपनी मेहनत और आस्था से परिवार का गुजारा कर रही है।

तीन ऑपरेशन के बाद चल पड़ा प्रीत

खेती करके जीवनयापन करने वाले सूरत गुजरात निवासी अजय कुमार पटेल के घर 11 वर्ष पहले प्री मैच्योर बेबी प्रीत का जन्म हुआ। जन्म के 6 माह तक बेबी को नियोनेटल इंटेंसिव केयर यूनिट में रखा गया। गरीब सिान अजय दुःख के तले कर्जदार भी हो गया पर कर भी क्या सकता था। सामान्य हालात होने पर गुजरात के सूरत, राजकोट और अन्य शहरों के प्रसिद्ध हॉस्पीटल्स में दिखाया पर कहीं पर भी उसे ठीक होने का भरोसा नहीं मिला। घर के पड़ोस में रहने वाले राजस्थान निवासियों ने अजय को नारायण सेवा में जाने की सलाह दी। पहली बार 2019 में दिव्यांग प्रीत को लेकर परिजन उदयपुर आए डॉक्टर्स ने ऑपरेशन

के लिए परामर्श दिया और एक ऑपरेशन कर दिया। बच्चे का पांव सीधा हो गया।

दूसरी बार फरवरी 2020 में संस्थान आये तब उसके दूसरे पांव का ऑपरेशन किया गया। दोनों पांवों के ऑपरेशन के बाद प्रीत वॉकर के सहारे चलने लग गया। इसे देख परिजन पुनः अक्टूबर 2020 में उसे संस्थान में लेकर आए तब तीसरा ऑपरेशन हुआ। अब प्लास्टर खुल चुका है... केलीपर्स व जूते पहनने के बाद प्रीत अपने पांव चलने लगा है। अब वह और उसे परिजन प्रसन्न हैं।

इन बड़ी बीमारियों के संकेत हो सकती हैं आंखों की सूजन

ब्रेन ट्यूमर यानि दिमाग से जुड़ी एक गंभीर बीमारी। इस समस्या का इलाज अगर समय पर न किया जाए तो यह जानलेवा हो सकती है। हालांकि इस बीमारी के लक्षणों का पता लगाना थोड़ा मुश्किल है लेकिन आंखों के जरिए इस बीमारी का समय पर पता चल सकता है। दरअसल, आंखे सेंट्रल नर्वस सिस्टम से जुड़ी होती है, जिसके कारण ब्रेन ट्यूमर डायबिटीज और हाई कोलेस्ट्रॉल जैसी बीमारियों का पता लगाया जा सकता है, चलिए जानते हैं आंखों में होने वाले बदलाव देते है किस बीमारी का संकेत।

ब्रेन ट्यमर

शरीर के सभी अंग किसी न किसी तरह एक दूसरे से जुड़े हैं। जैसें कि आंखें भी सेंट्रल नर्वस सिस्टम और कई ऑप्टिक नर्व्स ब्रेन से जुड़ी होती है। ऐसे में आखों की ब्लड वैसल्स या ऑप्टिक नर्व्स में किसी तरह की सूजन ब्रेन में गड़बड़ी का संकेत हो सकता है। इतना ही नहीं, यह ब्रेन ट्यूमर या ब्लड क्लॉट जैसी गंभीर समस्याओं का संकेत भी हो सकता है।

हाई कोलेस्ट्रॉल

कई बार अचानक आंखों के सामने कोई पर्दा जैसा आ जाता है, जिससे विजन लॉस है लेकिन आप इसे आम समस्या समझकर इग्नोर कर देते हैं। मगर कम समय के लिए विजन लॉस होना हाई कोलेस्ट्राल की और इशारा करता है। हाई कोलेस्ट्राल के कारण कैरोटिड धमनी में ब्लाक जम जाता है, जिसके कारण आंखों तक रक्त नहीं पहुंच पाता है और आपका विजन लॉस होने लगता है।

अनिद्रा की समस्या

अगर आपको आपकी आंखे थकी, लाल और सूजी हुई दिख रही है तो यह अनिद्रा की समस्या भी हो सकती हैं। ऐसे में आपको पूरी नींद और गहरी नींद लेनी चाहिए। साथ ही डॉक्टर से सलाह भी लें।

डायबिटीज

धुंधलापन होने का हमेशा ये मतलब नहीं है कि आपको चश्मे की जरूरत है बल्कि यह डायबिटीज के कारण भी हो सकता है। ऐसे में आपको तुरंत चेकअप करवाना चाहिए।

अनीमिया

अगर आपकी निचली पलक में पीलापन दिखाई दे तो आप खून की कमी यानी अनीमिया से पीड़ित है। ऐसे में आपको आयरन से भरपूर चीजों का सेवन करना चाहिए, जो कि लाल रक्त कोशिकाओं का निर्माण करता है।

स्ट्रोक

सामान्य तौर पर लटकी हुई पलकें बुढ़ापे की ही निशानी होती है लेकिन कुछ मामलों में स्ट्रोक और ऑटोइम्यून डिजीज जैसी गंभीर बीमारियों का संकेत भी हो सकता है।

थायराइड

थायराइड नामक हार्मोन के ज्यादा सक्रिय होने पर आंखों के चारों और के टिश्यूज में सूजन आ जाती है। इसके कारण आपकी आंखें उभरी हुई दिखाई देती हैं। ऐसे में आपको चेकअप करवाना चाहिए।

लीवर से जुड़ी बीमारियाँ

हेपेटाइटिस ओर सिरोसिस जैसी बीमारियों की वजह से आपके लीवर पर पड़ने वाले असर के कारण आंखें सफेद या पीली हो जाती हैं। अगर आपको भी आंखों में ये बदलाव दिखाई दें तो तुरंत डॉक्टर से सलाह लें।

हाई ब्लड प्रेशर

आंखों का रंग लाल होना हाई ब्लड प्रेशर की तरफ इशारा करता है। दरअसल, हाई ब्लड प्रेशर के कारण नसें उलझ जाती और कभी–कभी फट जाती है, जिसकी वजह से आंखें लाल हो जाती है।

पीलिया

आंखों का रंग पूरी तरह लाल होना पीलिया रोग का संकेत होता है। पीलिया रोग के लक्षण एक महीने बाद नजर आते है। ऐसे में आपको यह लक्षण दिखने पर तुरंत चेकअप करवाना चाहिए क्योंकि आपकी लापरवाही आपके लिए जानलेवा भी हो सकती है।

संस्थान निर्मित आर्टिफिशियल लिम्ब टिकाऊ

संस्थान का वर्कशॉप आर्टीफिशयल लिम्ब निर्माण में आधुनिक समय की लेटेस्ट जर्मन तकनीक का उपयोग करता है। जोकि गुणवत्ता के मापदण्ड में पूर्णतः खरा उतरता है। संस्थान की अनुभवी ऑर्थोटिस्ट एवं प्रोस्थोटिस्ट टीम दिव्यांगों की भावनाओं का ध्यान रखते हुए व्यवहार करती है।

डॉक्टर्स, प्रोस्थेटिक को फिट करते समय दिव्यांग बन्धुओं की तकलीफ एवं चुनौतियों को करीब से जानते है। फिर उन्हें कृत्रिम अंग पहनने व उतारने के साथ रोजमर्रा की जिन्दगी में उपयोग लेने का प्रशिक्षण देते हैं। अतः संस्थान निःशुल्क आर्टिफिशयल लिम्ब लगाने के अलावा अभ्यास पर भी जोर देता है। जिसे सफल परिणाम आ रहे हैं। आज तक 15 हजार से अधिक दिव्यांगों को कृत्रिम अंग बोंटे जा चुके हैं।

संस्थान का आभार जताया थैंक्यू नारायण सेवा संस्थान

रायपुर छत्तीसगढ़ से हम आये हैं। मेरा नाम जलेसी नेताम है। मेरा लड़का का नाम मनोज कुमार नेताम है। गाड़ी पर हाई टेंशन तार गिरने से अपना पांव गंवा बैठे मनोज कुमार नेताम। बिना पांव के जिंदगी जीना कितना दर्दनाक होता है, ये दर्द तो वो ही महसूस कर सकता है जिसके पांव ना हो। मनोज के पिता अपने नारायण सेवा संस्थान द्वारा अपने बेटे को निःशुल्क पांव लगाने पर बेहद खुश हैं। मनोज के पिता बताते हैं अपने पैर, मनोज कुमार के अच्छे से लग गया और हम खुश है उम्मीद नहीं था कि हमारे लड़का के पैर लगेगायहां आने के बाद विश्वास हो गया, पैर लग गया। खुद मनोज कहते हैं पैर तो पहले थे, अपने पांव से नहीं चला लेकिन आज अपने पांव पे चल रहा हूं। मैं बहुत खुश हूं। मेरा पैर लग गया, मैं चल रहा हूं। मनोज को नई जिदंगी देने के लिए ये संस्थान को बहुत धन्यवाद देते हैं।

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

'मन के जीते जीत सदा' दैनिक समाचार-पत्र अब ऑनलाईन साईट पर भी उपलब्ध है
www.narayanseva.org, www.mannkijeet.com
: kailashmanav

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) 313002
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
• सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353 • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023